

न्यायालय उपखण्ड अधिकारी नसीराबाद (अजमेर)

पीतासीन अधिकारी श्री राकेश कुमार गुप्ता (प्रार. प. पत्र)
राजस्थान सरकार संख्या 145/2021

उनवान

- 1 जसवत सिंह पुत्र भगवान सिंह
 - 2 दुर्गा देवी पत्नी भगवान सिंह
 - 3 बलवत सिंह पुत्र भगवान सिंह
 - 4 लाजवती पुत्री भगवान सिंह
 - 5 विरेन्द्र सिंह पुत्र भगवान सिंह
 - 6 सुशीला पुत्री भगवान सिंह जाति गुर्जर निवासी ग्राम नसीराबाद, अजमेर
- वादीगण

बनाम

- 1 राजस्थान सरकार जरिये तहसीलदार नसीराबाद।
- 2 रामचन्द्र पुत्र चतरा
- 3 रामपाल पुत्र नोन्दा
- 4 लक्ष्मण पुत्र दीपा जाति बैरवा निवासी ग्राम धोलादाता देराठू, नसीराबाद

— प्रतिवादीगण — 1 राज0 पैरोकार
2 से 4 अनुपरिस्थित



वाद पत्र अन्तर्गत धारा 88, 188 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955

- निर्णय -

दिनांक - 15.2.22

वादीगण ने उक्त वाद पेश कर निवेदन किया कि ग्राम वारापत्थर प0म0 देराठू तहसील नसीराबाद की निम्न आराजी वादीगण के पूर्वज की कयशुदा खातेदारी/काश्तकारी की है जिसका विवरण निम्न प्रकार है -

चौसाला ख0न0	रकबा	वर्किंग ख0न0	रकबा	हाल ख0न0	रकबा
749	06-05-00	801	06-06-00	994	1.02
750 मिन	00-01-00				

आराजी के मूल खातेदार वर्किंग जमाबंदी में रामपाल पुत्र नोन्दा, लक्ष्मण पुत्र दीपा, गणेश, चन्द्रा पि पूरा व रामचन्द्र पुत्र चतरा थे। वादीगण के पूर्वज भगवान सिंह पुत्र रामसुख गुर्जर ने जरिये पजीकृत विक्रय पत्र दिनांक 22.05.1958 को उक्त आराजी गणेश, चन्द्रा पि0 पूरा जाति बैरवा से सम्पूर्ण प्रतिफल राशि अदा कर कय कर ली थी। तथा कय दिनांक से ही उक्त आराजी के सम्पूर्ण रकबे पर वादीगण/पूर्वज काबिज काश्त चले आ रहे हैं। भगवान सिंह के वारिस वादीगण ही हैं जिसमें से धीरेन्द्र की मृत्यु नाऔलाद हो गयी है। वादीगण के पूर्वज ने उक्त विक्रय पत्र दिनांक 22.05.1958 द्वारा आराजी मुतनाजा के अतिरिक्त ग्राम धोलादाता देराठू अन्य आराजी भी कय की थी जिस बाबत कोई विवाद/ऐतराज नहीं होने से उक्त खसरा नसीराबाद का विवरण वाद में पेश नहीं किया जा रहा है। इस प्रकार ग्राम वारापत्थर की आराजी मुतनाजा वादीगण के पति/पिता की कयशुदा होने से वादीगण उक्त आराजी पर कदीम से काबिज काश्त

उपखण्ड अधिकारी
नसीराबाद (अजमेर)

तले आ रहे हैं। प्रतिवादीगण का उक्त आराजी पर कोई हक व अधिकार नहीं है। पूर्व वीरसाला खसरा नम्बर 749 रकबा 6-5-0 की आराजी के मूल खातेदार वकिंग जमाबंदी में रामपाल पुत्र नोन्दा लक्ष्मण पुत्र दीपा गणेश चन्दा पि पूरा व रामचन्द्र पुत्र बतरा थे। उक्त खातेदारों में से रामपाल पुत्र नोन्दा लक्ष्मण पुत्र दीपा व रामचन्द्र पुत्र बतरा उक्त विक्रय पत्र तस्दीक दिनांक 22.05.1958 से पूर्व ही नाओलाद फौत हो गये थे। उक्त मूल खातेदारों के वर्तमान में व विक्रय पत्र तस्दीक व समय कोई विधिक वारिस नहीं होने के कारण वीरसाला खसरा नम्बर 749 वकिंग खसरा नम्बर 801 रकबा 6-5-0 की आराजी का सम्पूर्ण रकबा विधिक अधिकारी व तत्कालीन खातेदार गणेश व चन्दा पि0 पूरा द्वारा वादीगण के पति/पिता को विक्रय कर दिया। किन्तु राजस्व अभिलेख में मूल खातेदार रामपाल पुत्र नोन्दा, लक्ष्मण पुत्र दीपा व रामचन्द्र पुत्र बतरा की विरासत दर्ज नहीं होने के कारण विक्रय पत्र का नामान्तकरण तस्दीक करते समय मात्र गणेश व चन्दा पि0 पूरा का हिस्सा ही कंता के नाम दर्ज किया गया शेष खातेदारों का हिस्सा कंता/वादीगण के नाम गलती से दर्ज नहीं किया गया। अतः वादीगण द्वारा उक्त वाद विक्रय पत्र की पालना में सम्पूर्ण आराजी मुनाजा वादीगण के नाम दर्ज करने हेतु यह वाद श्रीमान् की सेवा में पेश किया जा रहा है। आराजी मुतनाजा के विक्रेता की जाति बैरवा है जोकि अनुसूचित जाति वर्ग के हैं तथा वादीगण/पूर्वज/कंता की जाति अनुसूचित जाति वर्ग की नहीं है। किन्तु उक्त विक्रय पत्र दिनांक 22.05.1958 को तस्दीक होने के कारण धारा 42 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 से उक्त प्रकरण वर्जित नहीं है। इस सम्बन्ध में आराजी मुतनाजा वादत पूर्व में विचाराधीन प्रकरण सख्या 187/80 सरकार वनाम रामपाल वगै0 में सहायक जिलाधीश व दण्डनायक अजमेर के न्यायालय द्वारा निर्णय पारित विक्रय पत्र को सही माना है। अतः आराजी मुतनाजा पर प्रतिवादी सख्या 2 से 4 का नाम तर्क कर वादीगण को उक्त आराजी का खातेदार घोषित किया जावे। इस आशय की आज्ञाप्ति वहक वादीगण घोषित की जावे। तथा प्रतिवादी का जरिये स्थायी निषेधाज्ञा पावद किया जावे।

वाद पत्र दर्ज रजिस्टर कर प्रतिवादीगण को जरिये नोटिस तलब किया गया। तामीली कुनिन्दा की रिपोर्ट अनुसार प्रतिवादी सख्या 2 से 4 की कई वर्षों पूर्व नाओलाद मृत्यु हो गयी है। प्रकरण के न्यायिक निस्तारण हेतु तहसीलदार नसीराबाद से मौका रिपोर्ट तलब की गयी तथा प्रतिवादीगण /वारिसान की तलबी हेतु अखबार प्रकाशन करवाया गया। किन्तु प्रतिवादीगण की तरफ से कोई उपस्थित नहीं हुआ।

राज0 पैरोकार ने जवाब पेश कर निवेदन किया कि वादग्रस्त आराजी अनुसूचित जाति वर्ग से कय करने के कारण राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 42 का उल्लंघन है। विक्रय की गयी आराजी सभी खातेदारों द्वारा विक्रय नहीं की गयी है। विक्रय की गयी आराजी का नामानतकरण पूर्व में खुला हुआ है। अतः वाद पत्र खारिज योग्य है। प्रकरण में निम्न तनकियात कायम की गयी :-

1. आया आराजी मुतनाजा वादीगण के पूर्वजों की विधिक कयधुदा है ?

-- वादीगण

2. आया विक्रय पत्र आर टी ए की धारा 42 के उल्लंघन से बाधित है अतः वाद खारिज योग्य है ?


-- प्रतिवादी संख्या 1

3. आया विक्रय पत्र में वादीगण के पूर्वज द्वारा प्रतिवादी संख्या 1 से 3 का हिस्सा कय किया गया अतः वादीगण सम्पूर्ण हिस्से पर खातेदारी प्राप्ति के अधिकारी हैं ?

-- वादीगण

3. अनुतोष ?

अधिवक्ता वादीगण ने वाद के समर्थन में जसवत सिंह व प्रेम पुत्र भेलाशकर के


विक्रम अग्रवाल

अजमेर (अजमेर)

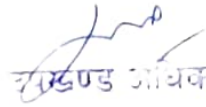
वादावली दर्ज करवाये राजस्व अभिलेख व विक्रय पत्र पेश किये
राज० पैरोकार न जाहिर किया कि वादी अपना वाद स्वयं सिद्ध कर एवं सहाय नहीं पेश व (न)
जाहिर किया।

बहस उपर्युक्त सुनी गयी।

पत्रावली का अवलोकन किया विद्वान अधिवक्ता वादीगण व राज० पैरोकार की बहस
पर मनन किया तनकी अनुसार निर्णय निम्नवत् है -
तनकी संख्या 1 व 3 -

वाद पत्र में उपलब्ध दस्तावेज अनुसार ग्राम ग्राम बारापत्थर के दोसाला
खसरा नम्बर 749 रकबा 6-5-0 की आराजी वादीगण के पूर्वज ने जरिये पजीकृत विक्रय पत्र
दिनांक 22.5.1958 को गणेश, चन्द्रा पि० पूरा से कय कर ली थी। कय दिनांक सही उक्त
आराजी पर वादीगण/पूर्वज का कब्जा काश्त चला आ रहा है। उक्त विक्रय पत्र पजीकृत है
जिसकी सत्यता से इंकार नहीं किया जा सकता है। विक्रय के बाद खातेदारों के खातेदारी
अधिकारों का अवसान हो चुका है। आराजी के मूल खातेदार वर्किंग जमावदी में रामपाल पुत्र
नोन्दा लक्ष्मण पुत्र दीपा, गणेश, चन्द्रा पि. पूरा व रामचन्द्र पुत्र चतरा थे। गणेश व चन्द्र पि० पूरा
द्वारा उक्त आराजी का बैचान किया गया। उक्त सम्पूर्ण आराजी को विक्रेता द्वारा वादीगण के
पूर्वज को बैचान किया गया विक्रय पत्र में भी हिस्से की जगह सम्पूर्ण आराजी का बैचान किया
हुआ है। वादीगण का कथन है कि रामपाल पुत्र नोन्दा, लक्ष्मण पुत्र दीपा व रामचन्द्र पुत्र चतरा
विक्रय दिनांक से पूर्व ही फौत हो गये थे उक्त विक्रेता को प्रतिवादी संख्या 2 से 4 मुर्तिब किया
है किन्तु तामीली कुनिन्दा की रिपोर्ट अनुसार उक्त तीनों व्यक्तियों की कई वर्ष पूर्व नाओलाद
मृत्यु हा गयी है। इस बाबत तहसीलदार नसीराबाद से भी मौका रिपोर्ट तलब की गयी।
तहसीलदार नसीराबाद ने रिपोर्ट में अवगत कराया कि उक्त नाम के कोई व्यक्ति जाति बैरवा से
संबंधित वर्तमान में निवास नहीं करते हैं। तथा इनके वारिसों के बारे भी कोई जानकारी नहीं दी
गयी आराजी मुतनाजा पर कय दिनांक से ही कब्जा वादीगण का बताया गया है। वादीगण द्वारा
प्रस्तुत सीमा ज्ञान मौका पर्चा दिनांक 23.11.21 में भी आराजी मुतनाजा पर कब्जा वादीगण का
ही होना बताया गया है। अखबार प्रकाशन के बावजूद भी प्रतिवादीगण अथवा उनके वारिस
प्रकरण में उपस्थित नहीं हुये हैं। प्रकरण में वाद पत्र के खण्डन हेतु कोई तथ्य पत्रावली पर
उपलब्ध नहीं है। वादीगण द्वारा प्रस्तुत विक्रय पत्र व राजस्व अभिलेख से वाद के कथनों की
पुष्टि होती है। आराजी मुतनाजा के वर्किंग खसरा नम्बर 801 व हाल खसरा नम्बर 994 रकबा
1.02 की आराजी पर प्रतिवादी संख्या 2 से 4 का नाम दर्ज कर दिया है। जबकि विक्रय पत्र
अनुसार सम्पूर्ण आराजी पर वादीगण/क्रेता का नाम दर्ज होना था। अतः आराजी मुतनाजा का
वर्तमान इन्द्राज त्रुटिपूर्ण सिद्ध होता है। आराजी मुतनाजा पर वादीगण सम्पूर्ण आराजी पर
खातेदारी प्राप्ति के अधिकारी है। तनकी बहक वादीगण विरुद्ध प्रतिवादीगण निर्णित की जाती है।
तनकी संख्या 2 :-

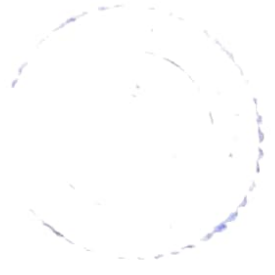
आराजी मुतनाजा राजस्व अभिलेख में तत्कालीन खातेदार रामपाल पुत्र नोन्दा, लक्ष्मण पुत्र दीपा,
गणेश, चन्द्रा पि पूरा व रामचन्द्र पुत्र चतरा थे। उक्त खातेदारों अनुसूचित जाति वर्ग के हैं।
वादीगण/पूर्वज अन्य जाति वर्ग के हैं। राज० पैरोकार का कथन है कि उक्त विक्रय पत्र द्वारा
धारा 42 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 के प्रावधान का उल्लंघन होता है अतः वाद
खारिज योग्य है। किन्तु वादीगण द्वारा पत्रावली में सहायक जिलाधीश एवं कार्यपालक
दण्डनायक अजमेर के यहाँ पूर्व में निर्णित प्रकरण संख्या 187/80 सरकार बनाम रामपाल वर्ग 0
में पारित आदेश दिनांक 30.12.81 की प्रति पेश की है। जिसके अनुसार अधिसूचना जारी कर
बहस सुनी गयी। पूर्व में पेश बैनामे का अवलोकन किया गया भूमि को गणेश व चन्द्रा पि० पूरा
जाति बैरवा ने दिनांक 20.5.1958 को बैचान किया है। इस प्रकार बैचान राज्य सरकार के
नोटिफिकेशन दिनांक 24.04.1968 के पूर्व का है अतः अग्रिम कार्यवाही की आवश्यकता नहीं है।


जिल्हाधिकारी
नर्मदावादा (अजमेर)

...त पर दाखिल दफ्तर हो। उक्तानुसार आराजी मृतनाजा का बैचान दिनांक 24/04/1968 को ... का होने के कारण धारा 42 राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 के प्रावधान प्रकरण में लागू नहीं होते हैं। तनकी बहक वादीगण विरुद्ध प्रतिवादी संख्या 1 निर्णित की जाती है।

उक्तानुसार धाम बारापत्थर के खसरा नंबर 994 रकबा 102 की आराजी मृतनाजा पर वादीगण का वाद "रवीकार" किया जाता है। वादीगण को उक्त आराजी के सम्पूर्ण रकबे का खातेदार घोषित किया जाता है। तहसीलदार नसीराबाद उक्तानुसार राजस्व रकबा में इम्सल दरमद की कार्यवाही करावे। पक्षकार खर्चा स्वयं वहन करे। इस आशय की पर्चा डिक्री जारी हो।

निर्णय आज दिनांक 15/2/22 को सारे इजलास सुनाया गया।



[Handwritten signature]

उपरिष्ठ अधिकारी
नसीराबाद (अजमेर)

उपबान

जसवंत सिंह बनाम राज० सरकार

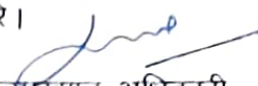
काब्र नंबर 88 188 राज का अधि० 1955

राजस्व मुकदमा नम्बर - 145 / 2021

पेश करने की दिनांक - 25.11.21

यह मुकदमा आज नारसे इनफिनाल कलई सुबुरु राकेश कुमार गुप्ता (आर ए एन)-व हाजिर अभिभाषक जितेन्द्र गुजर मुददई राज० पैरोकार अभिभाषक गिनजामिन मुदायला पेश हो कर दिया जाता है व डिप्टी दी जाती है कि -

पाम बारापत्थर के खसरा नंबर 994 रकबा 1.02 की आराजी मुलनाजा पर वादीगण का वाद "स्वीकार" किया जाता है। वादीगण को उक्त आराजी के सम्पूर्ण रकबे का खातेदार घोषित किया जाता है। तहसीलदार नसीराबाद उक्तानुससार राजस्व रेकार्ड में अमल दरामद की कार्यवाही करावे। पक्षकार खर्चा स्वयं वहन करे।


उपखण्ड अधिकारी
नसीराबाद

खर्चा इस मुकदमे में मय सूद व शरह तक----- को सालाना आज की तारीख से यानि वसूली तक को अदा करे।

वअखत दस्तखत व मोहर अदालत के आज दिनांक 15 माह 8 2 सन 2022 का जारी की गयी।

मुददई

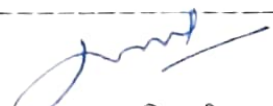
मुदायला

स्टाम्प अरजी दावा
स्टाम्प वकालतनामा
स्टाम्प वजह सवृत
मेहनताना वकील
फीस कमिश्नर
खर्चा गवाहान
वावत् इजराय हुक्मनामा
मुतफरिक

स्टाम्प वकालतनामा
स्टाम्प अरजी
मेहनताना वकील
खर्चा गवाहान
फीस कमिश्नर
वावत् इजराय हुक्मनामा
मुतफरिक

मिजान

मिजान


उपखण्ड अधिकारी
नसीराबाद